क्या करें

- शहतूत प्ररोह को सुबह या शाम के समय धारदार आरी या ब्रश कटर से काटें।
- काटे गए प्ररोह को सीधा खड़ा करके भींगे हुए जूट के कपड़े से लपेटकर संरक्षित करें।
- लार्वा के बेहतर वृद्धि हेतु प्रति वर्ग फीट में 50-70 लार्वा को ही रखें।
- असमान / रोगग्रस्त लार्वा को इकट्ठा कर नष्ट कर दें।
- बीमारियों को रोकने के लिए समुचित बिस्तर रोगाणुनाशन पद्धति को अपनाएं तथा साफ-सफाई बनाए रखें।
- 50% लार्वा के परिपक्व होने के पश्चात आरोपण हेतु प्लास्टिक कॉलापसिबल चंद्रिकाओं का उपयोग करें।

क्या न करें

- लार्वा द्वारा अशन करने के दौरान बिस्तर रोगाणुनाशी का उपयोग न करें।
- बिस्तर रोगाणुनाशी का छिड़काव करने के पश्चात अशन करने में देर न करें।

अतिरिक्त लाभ

कार्यकलाप	ट्रे कीटपालन	शेल्फ कीटपालन	लाभ
श्रमिक (मानव दिवस @ रु. 250/दिन)	39	30	9
कोसा उपज (किग्रा/100 रोमुच) @ रु. 250	50	55	5
अनुमानित अतिरिक्त लाभ (रु.)			3500

शेल्फ-कीटपालन के लाभ

- सुगम रेशमकीट पालन
- कठिन परिश्रम का परिहार
- पत्तियां लंबी अवधि तक ताजा रहती है
- कीटपालन बिस्तर में बेहतर संवातन
- बेहतर स्वच्छ स्थितियों की सुविधा देता है

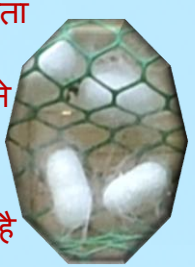

- प्रतिदिन बिस्तर की साफ-सफाई करने से परिहार होती है तथा इससे श्रम की बचत होती है
- पुनः संक्रमण की संभावना कम होती है
- प्रति 100 रोमुच 5 किलो ग्राम कोसा उत्पादन में वृद्धि होती है
- गुणवत्तायुक्त कोसा उत्पादन
- बेहतर आर्थिक लाभ

डॉ. त. दत्ता विश्वास, डॉ. शफी अफरोज एवं डॉ. वी. शिवप्रसाद

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर– 742 101, पश्चिम बंगाल
दूरभाष: 03482-224713, EPABX: 224716/17/18
फैक्स: 03482-224714/224890
ई-मेल: csrtiber@gmail.com; csrtiber.csb@nic.in
www.csrtiber.res.in

पैम्फलेट सं .70 @केरेउअवप्रसं, बहरमपुर जनवरी, 2020

शेल्फ रेशम कीटपालन
(प्ररोह अशन)

केरेउअवप्रसं

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल

शेल्फ रेशम कीटपालन
(प्ररोह अशन)

पारंपरिक ट्रे में शहतूत पर्ण का उपयोग करके रेशमकीट पालन के करने के बजाय शेल्फ-कीटपालन में प्ररोह अशन का उपयोग करके कोसा उपज व गुणवता में वृद्धि दर्ज होती है। शेल्फ-कीटपालन से उत्पादकता में वृद्धि के अलावे कोसा लागत को भी कम करती है। साथ ही, दैनांदिन के डाला उठाने व रखने तथा बिस्तर की साफ-सफाई जैसे श्रमसाध्य कार्यों का परिहार करती है। कृषकों या चौकी कीटपालन केंद्रों (सीआरसी) द्वारा चौकी कीट को दूसरे निर्मोचन के पश्चात उन्हें शेल्फ - कीटपालन स्टैंडों में स्थानांतरित कर दिया जाता है। चौथे एवं पांचवें इंस्टार में रेशमकीट पालन हेतु शेल्फ कीटपालन की अनुशंसा की जाती है। रेशमकीट के परिपक्व होने के पश्चात प्लास्टिक कोलैप्सबेल चंद्रिकाओं को कोसाकरण करने हेतु शेल्फ कीटपालन स्टैंड पर फैला दिया जाता है।

प्ररोह कीटपालन स्टैंड व शेल्फ

- कीटपालन हेतु शेल्फ कीटपालन स्टैंड लोहे, लकड़ी, बांस या कठोर प्लास्टिक का उपयोग करके रैक [ताक] बनाया जा सकता है।
- स्टैंड की चौड़ाई 5 फीट एवं लंबाई 24 फीट होती है। एक स्टैंड में 3-5 शेल्फ हो सकते हैं जिसके मध्य 24 इंच का अंतराल होना चाहिए।
- 100 रोमुच (70 लार्वा/वर्ग फीट) के कीटपालन हेतु 600-700 वर्ग फीट के बिस्तर की अनुशंसा की जाती है।
- नॉयलन की रस्सियों, जाली या जीआई वायर स्ट्रिप से शेल्फ को तैयार किया जाता है एवं उसके उपर पुराने समाचार पत्र बिछाकर रेशम कीटों को छोड़ दिया जाता है।

प्ररोह अशन

- 50-60 दिन वाले शहतूत प्ररोह को बारी-बारी से दोनों ओर घुमाकर लार्वा को अशन किया जाता है।
- रेशमकीट को प्रति दिन दो या तीन बार प्ररोह अशन किया जाता है।
- प्ररोह अशन की मात्रा को निर्मोचन के पहले नियंत्रित किया जाना चाहिए।

फसल संरक्षण

- अनुशंसित सारणी के अनुसार बिस्तर रोगाणुनाशी (लेबेक्स/विजेता) का अनुप्रयोग अवश्य करें।
- यदि, खाने योग्य पत्तियां कीटपालन बिस्तर पर है तो उस समय बिस्तर रोगाणुनाशी का अनुप्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

बिस्तर रोगाणुनाशी की आवश्यकता (100 रोमुच)

लार्वा अवस्था	मात्रा
प्रथम निर्मोचन के उपरांत	100ग्रा
द्वितीय निर्मोचन के उपरांत	250ग्रा
तृतीय निर्मोचन के उपरांत	750ग्रा
चतुर्थ निर्मोचन के उपरांत	1500ग्रा
अंतिम इंस्टार के चौथे दिन	2800ग्रा
कुल	**5400 (5.4 किग्रा)**

उत्तरावस्था कीपालन हेतु अनुकूल अवस्था (100 रोमुच)

विवरण	चतुर्थ इंस्टार	पांचवा इंस्टार
तापमान (°C)	24 - 25	23- 24
सापेक्षिक आर्द्रता (%)	70 - 75	65 – 70
अशन पद्धति	प्ररोह अशन	
बिस्तर क्षेत्र (वर्ग फीट)		
प्रारंभिक	**190**	**380**
अंतिम	**380**	**700**
प्ररोह की मात्रा(किग्रा)	525	2630